संपादकीय

कानून ने आंखें मूंदीं तो किसान ने चोर से जोड़ लिए हाथ

पंजाब के फरीदकोट जिले के पखखी कलां गांव से सामने आई तस्वीर लोकतंत्र के माथे पर कालिख पोतने के लिए काफी है। थाने-चौकी से निराश किसानों ने चोरों के नाम पोस्टर चिपकाकर लिखा कि मोटर चोरी मत करो, अपना क्यूआर कोड लगा दो, हम सुरक्षा टैक्स के रूप में जितनी राशि मांगोगे, खाते में डाल देंगे। यह संदेश साफ बताता है कि व्यवस्था पर से जनता का भरोसा डगमगा रहा है। एक ही रात में 25 सिंचाई मोटरें चोरी हो गईं और पुलिस दो गिरफ्तारियों का दावा कर अपनी जिम्मेदारी पूरी मान रही है।

सरकार डिजिटल इंडिया का ढोल पीट रही है, लेकिन पखखी कलां के किसानों ने उसका एक कड़वा व्यंग्य सामने रख दिया। चोर को क्यूआर कोड पर भुगतान करने का प्रस्ताव दरअसल कानून-व्यवस्था पर सीधा सवाल है। यदि किसान अपराधी से समझौता करने को मजबूर हो जाए, तो यह व्यवस्था की सबसे बड़ी विफलता है।

किसानों का यह पोस्टर केवल नाराजगी नहीं, बल्कि पुलिस तंत्र पर अविश्वास का प्रतीक है। मोटर, ट्रांसफार्मर और बिजली के तार चोरी होने के बाद कुछ ही समय में कबाड़ में बदल जाते हैं। ऐसे संगठित अपराध बिना मजबूत नेटवर्क के संभव नहीं हैं। ग्रामीणों का मानना है कि यदि कार्रवाई प्रभावी होती तो अपराधियों के हौसले इतने बुलंद न होते।

दूसरी ओर बेरोजगारी और नशे की समस्या ने भी हालात को गंभीर बनाया है। त्वरित कमाई की चाह में कुछ युवा चोरी जैसे अपराधों की ओर बढ़ रहे हैं। यदि अपराधियों में कानून का भय समाप्त हो जाए तो गांव सबसे आसान निशाना बन जाते हैं।

राजनीतिक प्राथमिकताओं पर भी सवाल उठते हैं। जब तक किसी बड़ी घटना का असर सत्ता के गलियारों तक नहीं पहुंचता, तब तक ग्रामीण समस्याएं अक्सर उपेक्षित रह जाती हैं। किसानों की सुरक्षा और उनकी संपत्ति की रक्षा भी कानून-व्यवस्था का उतना ही महत्वपूर्ण हिस्सा है जितना किसी शहर की सुरक्षा।

अब केवल बयानबाजी से काम नहीं चलेगा। पुलिस को कबाड़ी नेटवर्क पर सख्त कार्रवाई करनी होगी, चोरी के माल की खरीद-बिक्री पर निगरानी बढ़ानी होगी और ग्रामीण क्षेत्रों में नियमित गश्त सुनिश्चित करनी होगी। किसान सुरक्षा हेल्पलाइन की प्रभावी व्यवस्था और त्वरित पुलिस प्रतिक्रिया भी जरूरी है, ताकि लोगों का विश्वास दोबारा स्थापित हो सके। पखखी कलां का क्यूआर पोस्टर कोई चुटकुला नहीं, बल्कि चेतावनी है। जब नागरिकों का भरोसा कानून से हटकर अपराधियों पर टिकने लगे तो लोकतांत्रिक व्यवस्था कमजोर होने लगती है। सुरक्षा टैक्स जैसी सोच इस बात का संकेत है कि राज्य की मूल जिम्मेदारी पर सवाल उठ रहे हैं। यदि समय रहते कानून का इकबाल बहाल नहीं किया गया, तो यह प्रवृत्ति और खतरनाक रूप ले सकती है। जिस दिन अन्नदाता खुद को असुरक्षित महसूस करने लगे, उस दिन केवल उसकी फसल ही नहीं, बल्कि व्यवस्था की साख भी संकट में पड़ जाती है।

जनादेश से जनविश्वास तकः मोदी युग की विकास यात्रा

अपूर्व तिवारी

भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में वर्ष 2026 एक महत्वपूर्ण पड़ाव बन गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश के सबसे लंबे समय तक पद पर रहने वाले प्रधानमंत्री बन चुके हैं। इससे पहले यह रिकॉर्ड जवाहरलाल नेहरू के नाम था। यह उपलब्धि केवल समय का रिकॉर्ड नहीं, बल्कि लगातार तीन आम चुनावों में जनता द्वारा व्यक्त किए गए विश्वास का भी प्रमाण है। इसलिए मोदी युग का मूल्यांकन केवल राजनीतिक सफलता से नहीं, बल्कि भारत में आए व्यापक आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक परिवर्तनों के आधार पर किया जाना चाहिए।

जवाहरलाल नेहरू ने स्वतंत्र भारत की संस्थागत नींव रखी। लोकतांत्रिक व्यवस्था, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग, वैज्ञानिक संस्थान और आधुनिक विकास मॉडल उनके योगदान रहे। नरेंद्र मोदी का कार्यकाल उसी नींव पर तकनीक, सुशासन, आत्मनिर्भरता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप नए भारत के निर्माण का प्रयास माना जा सकता है। दोनों नेताओं ने अलग-अलग परिस्थितियों में देश का नेतृत्व किया और अपने समय की चुनौतियों के अनुरूप निर्णय लिए।

मोदी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धियों में शासन व्यवस्था में पारदर्शिता और तकनीक का समावेश शामिल है। जनधन, आधार और मोबाइल की त्रिवेणी ने करोड़ों नागरिकों को बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ा और सरकारी सहायता सीधे लाभार्थियों के खातों तक पहुंची। डिजिटल इंडिया अभियान और यूपीआई आधारित भुगतान प्रणाली ने भारत को दुनिया की अग्रणी डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं में स्थापित किया। सरकारी सेवाओं के डिजिटलीकरण ने आम नागरिक के लिए व्यवस्था को अधिक सरल और पारदर्शी बनाया।

आर्थिक क्षेत्र में मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत और उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजनाओं ने विनिर्माण क्षेत्र को नई गति दी। मोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स और रक्षा उत्पादन में भारत की क्षमता बढ़ी। स्टार्टअप इंडिया और स्किल इंडिया ने युवाओं में नवाचार को बढ़ावा दिया। वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) लागू कर पूरे देश को एकीकृत कर व्यवस्था से जोड़ने का प्रयास किया गया, जिससे 'एक राष्ट्र, एक कर' की अवधारणा को बल मिला और व्यापारिक प्रक्रियाओं में सरलता आई। विदेशी निवेश में वृद्धि और विनिर्माण विस्तार ने भारत को

मोदी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धियों में शासन व्यवस्था में पारदर्शिता और तकनीक का समावेश शामिल है। जनधन, आधार और मोबाइल की त्रिवेणी ने करोड़ों नागरिकों को बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ा और सरकारी सहायता सीधे लाभार्थियों के खातों तक पहुंची। डिजिटल इंडिया अभियान और यूपीआई आधारित भुगतान प्रणाली ने भारत को दुनिया की अग्रणी डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं में स्थापित किया। सरकारी सेवाओं के डिजिटलीकरण ने आम नागरिक के लिए व्यवस्था को अधिक सरल और पारदर्शी बनाया।

वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का महत्वपूर्ण केंद्र बनाया।

बुनियादी ढांचे का विस्तार मोदी सरकार की सबसे स्पष्ट उपलब्धियों में शामिल है। राष्ट्रीय राजमार्गों, एक्सप्रेस-वे, वंदे भारत ट्रेनों, आधुनिक रेलवे स्टेशनों, नए हवाई अड्डों, बंदरगाहों और लॉजिस्टिक नेटवर्क के विकास ने देश की कनेक्टिविटी को नई गति दी। गांवों तक सड़क, बिजली, गैस, इंटरनेट और पेयजल सुविधाओं का विस्तार हुआ। हर घर जल मिशन और ग्रामीण अवसंरचना में निवेश ने विकास को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने का प्रयास किया।

सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री आवास योजना, स्वच्छ भारत अभियान और किसान सम्मान निधि जैसी योजनाओं ने करोड़ों परिवारों को प्रत्यक्ष लाभ पहुंचाया। गरीबों को स्वास्थ्य सुरक्षा, महिलाओं को स्वच्छ ईंधन, ग्रामीण परिवारों को आवास और किसानों को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने की दिशा में व्यापक कार्य हुआ। नारी शक्ति वंदन अधिनियम के माध्यम से संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण का मार्ग प्रशस्त किया गया। तीन तलाक को समाप्त करने वाला कानून भी महिलाओं के अधिकारों और लैंगिक न्याय की दिशा में महत्वपूर्ण निर्णय माना गया।

मोदी सरकार के कार्यकाल में कई ऐसे फैसले हुए जिनकी लंबे समय से मांग की जा रही थी। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाकर वहां की संवैधानिक व्यवस्था को देश के अन्य राज्यों के समान बनाना ऐतिहासिक निर्णय माना गया। समर्थकों के अनुसार इससे राष्ट्रीय एकीकरण और विकास की नई संभावनाएं खुलीं। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर का निर्माण करोड़ों लोगों की आस्था और दशकों पुरानी आकांक्षा की पूर्ति के रूप में देखा गया, जिसने सांस्कृतिक पुनर्जागरण को नई ऊर्जा प्रदान की।

नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) को लागू करना और समान नागरिक संहिता (यूसीसी) की दिशा में पहल भी सरकार के प्रमुख वैचारिक कदमों में शामिल रहे। समर्थकों का मानना है कि इन पहलों का उद्देश्य सभी नागरिकों के लिए समान अधिकार और समान नागरिक व्यवस्था की स्थापना है। इन विषयों पर व्यापक राजनीतिक और सामाजिक बहस भी हुई, जो लोकतंत्र की स्वाभाविक प्रक्रिया का हिस्सा है।

राष्ट्रीय सुरक्षा और विज्ञान के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय उपलब्धियां दर्ज हुईं। सीमा अवसंरचना का तेजी से विकास, रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता, स्वदेशी हथियार निर्माण और रक्षा निर्यात में वृद्धि ने भारत की सामरिक क्षमता को मजबूत किया। चंद्रयान-3 की सफल चंद्र लैंडिंग और आदित्य-एल1 मिशन ने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम को वैश्विक प्रतिष्ठा दिलाई। सेमीकंडक्टर मिशन, हरित हाइड्रोजन मिशन और नवीकरणीय ऊर्जा के विस्तार ने भविष्य की अर्थव्यवस्था की दिशा में मजबूत आधार तैयार किया।

विदेश नीति के क्षेत्र में भारत की भूमिका पहले की तुलना में अधिक प्रभावशाली हुई है। जी-20 शिखर सम्मेलन की सफल मेजबानी, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन, क्वाड में सक्रिय भागीदारी, वैश्विक दक्षिण की आवाज के रूप में भारत की भूमिका और कोविड काल में वैक्सीन मैत्री अभियान ने भारत की कूटनीतिक साख को नई ऊंचाई दी। आज भारत वैश्विक मंचों पर अधिक आत्मविश्वास के साथ अपने राष्ट्रीय हितों की पैरवी करता दिखाई देता है।

निश्चित रूप से रोजगार सृजन, कृषि सुधार, शिक्षा की गुणवत्ता और आय असमानता जैसी चुनौतियां अभी भी मौजूद हैं। किंतु यह भी उतना ही सत्य है कि पिछले एक दशक में भारत की विकास गति, डिजिटल परिवर्तन, आधारभूत संरचना, सामाजिक सुरक्षा, सांस्कृतिक चेतना और वैश्विक प्रतिष्ठा में जो व्यापक बदलाव आया है, उसने देश की दिशा और सोच दोनों को बदल दिया है।

यदि नेहरू को आधुनिक भारत की संस्थागत नींव का निर्माता कहा जाता है तो नरेंद्र मोदी को उस भारत को गति, तकनीक, आत्मविश्वास और वैश्विक पहचान देने वाले नेता के रूप में देखा जा सकता है। इतिहास दोनों का मूल्यांकन अपने-अपने समय और परिस्थितियों के आधार पर करेगा, किंतु यह निर्विवाद है कि सबसे लंबे समय तक प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी का कार्यकाल भारत की विकास यात्रा का एक महत्वपूर्ण अध्याय बन चुका है और विकसित भारत के लक्ष्य को नई ऊर्जा प्रदान कर रहा है।

नरेन्द्र मोदी का युग

सुहेल सेठ

नरेन्द्र मोदी की राजनीतिक यात्रा अक्सर रॉबर्ट फ्रॉस्ट की उस प्रसिद्ध पंक्ति की याद दिलाती है कि उन्होंने कम इस्तेमाल होने वाला रास्ता चुना और उसी ने सारा अंतर पैदा किया। भारत के इतिहास में जवाहरलाल नेहरू और नरेन्द्र मोदी दो अलग-अलग युगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। नेहरू ने नवस्वतंत्र और विभाजन से जूझ रहे भारत का नेतृत्व किया, जबकि मोदी ने वैश्विक प्रतिस्पर्धा, डिजिटल क्रांति और भू-राजनीतिक चुनौतियों के दौर में देश की कमान संभाली। दोनों की परिस्थितियां अलग थीं, इसलिए उनकी शासन शैली और प्राथमिकताएं भी भिन्न रहीं।

नेहरू का मॉडल संस्थानों के निर्माण और राज्य-नियंत्रित अर्थव्यवस्था पर आधारित था। उन्होंने संसदीय लोकतंत्र, वैज्ञानिक सोच और आईआईटी तथा एम्स जैसे संस्थानों की नींव रखी। वहीं मोदी ने शासन को जनभागीदारी और प्रत्यक्ष लाभ वितरण से जोड़ने का प्रयास किया। 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मंत्र के साथ बैंक खाते, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी), उज्ज्वला योजना, आवास, शौचालय, जलापूर्ति और डिजिटल सेवाओं के माध्यम से सरकारी योजनाओं को सीधे नागरिकों तक पहुंचाने पर बल दिया गया।

दोनों प्रधानमंत्रियों के कार्यकाल की तुलना करते समय समय और परिस्थितियों का अंतर भी महत्वपूर्ण है। नेहरू के समय भारत की आबादी लगभग 34 करोड़ थी और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा सीमित थी। मोदी के नेतृत्व में देश की आबादी 140 करोड़ के करीब पहुंच चुकी है और लोकतंत्र अत्यंत प्रतिस्पर्धी तथा डिजिटल निगरानी वाले दौर में प्रवेश कर चुका है। 1952 के पहले आम चुनाव में लगभग 17 करोड़ मतदाता थे, जबकि 2014 में यह संख्या 83 करोड़ से अधिक हो गई और 2024 तक इसमें और वृद्धि हुई। ऐसे वातावरण में लगातार तीन बार राष्ट्रीय जनादेश प्राप्त करना उनकी राजनीतिक स्वीकार्यता का संकेत माना जाता है।

आर्थिक मोर्चे पर नेहरू ने भारी उद्योगों और वैज्ञानिक संस्थानों का आधार तैयार किया, जबकि मोदी काल में भारत को वैश्विक विकास के प्रमुख इंजन के रूप में प्रस्तुत किया गया। कोविड-19 महामारी, महंगाई, आपूर्ति श्रृंखला संकट और अंतरराष्ट्रीय संघर्षों के बावजूद भारत की औसत विकास दर लगभग 6.5 से 7 प्रतिशत के आसपास बनी रही। 2014 से 2024 के बीच राष्ट्रीय राजमार्ग नेटवर्क में 54 हजार किलोमीटर से अधिक का विस्तार हुआ। यूपीआई, आधार आधारित सेवाएं, डिजिटल भुगतान और पोर्टेबल कल्याणकारी योजनाओं ने शासन को अधिक तेज और पारदर्शी बनाया।

उच्च शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में भी विस्तार पर विशेष ध्यान दिया गया। आईआईटी की संख्या बढ़कर 23, आईआईएम की 21 और एम्स की संख्या 23 तक पहुंची। इससे उच्च शिक्षा और चिकित्सा सुविधाओं का दायरा व्यापक हुआ। सामाजिक प्रतिनिधित्व के स्तर पर भी अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया। नारी शक्ति वंदन अधिनियम के माध्यम से महिलाओं के लिए एक-तिहाई आरक्षण का मार्ग प्रशस्त किया गया।

विदेश नीति में भी उल्लेखनीय बदलाव दिखाई देता है। नेहरू की गुटनिरपेक्ष नीति अपने समय की आवश्यकता थी, जबकि मोदी ने अमेरिका, रूस, यूरोप, खाड़ी देशों और ग्लोबल साउथ के साथ समानांतर संबंध विकसित करते हुए बहुआयामी कूटनीति अपनाई। भारत आज वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला, डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, जलवायु परिवर्तन और तकनीकी सहयोग जैसे मुद्दों पर सक्रिय भूमिका निभा रहा है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की बढ़ती भूमिका इस परिवर्तन को रेखांकित करती है।

सुरक्षा के क्षेत्र में भी रणनीति अधिक सक्रिय दिखाई देती है। सीमाई चुनौतियों और बदलते वैश्विक परिदृश्य के बीच प्रतिरोधक क्षमता, सीमा प्रबंधन और त्वरित प्रतिक्रिया पर जोर दिया गया।

वहीं खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में पीएल-480 के दौर से आगे बढ़कर देश आज रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन, डिजिटल सार्वजनिक वितरण प्रणाली और प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के माध्यम से लगभग 80 करोड़ लोगों तक मुफ्त अनाज पहुंचाने में सक्षम हुआ है। पर्यावरण और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में भी संरक्षित क्षेत्रों, बाघ अभयारण्यों और रामसर स्थलों का विस्तार हुआ, वहीं चीतों का पुनर्प्रवेश और प्रमुख मंदिरों व विरासत स्थलों के पुनर्विकास जैसे कदमों ने सांस्कृतिक पहचान को नई अभिव्यक्ति दी।

नरेन्द्र मोदी ने राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर निर्वाचित प्रमुख के रूप में सबसे लंबा कार्यकाल पूरा करने का रिकॉर्ड बनाया है और लगातार निर्वाचित प्रधानमंत्री के रूप में भी नया इतिहास रचा है। यदि नेहरू की विरासत ने आधुनिक भारत की संस्थागत नींव रखी, तो मोदी के नेतृत्व को उन संस्थाओं के व्यापक विस्तार, तकनीकी सशक्तीकरण, तेज क्रियान्वयन और वैश्विक स्तर पर भारत की बढ़ती भूमिका के संदर्भ में देखा जाता है। अलग-अलग समय में अलग-अलग नेतृत्व की आवश्यकता होती है। एक युग ने ढांचा तैयार किया, तो दूसरे ने उसे विस्तार, गति और नई दिशा देने का प्रयास किया। यही कारण है कि अनेक लोगों की दृष्टि में नरेन्द्र मोदी का नेतृत्व समकालीन भारत की राजनीति और शासन व्यवस्था पर दीर्घकालिक प्रभाव छोड़ने वाला युग सिद्ध हुआ है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, एक सहृदय जनतंत्रवादी

एच. डी. देवेगौड़ा

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री नरेंद्र मोदी भारत के सबसे लंबे समय तक लगातार सेवा करने वाले लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित प्रधानमंत्री बन गए हैं। मेरी खुशी केवल इस बात की नहीं है कि उन्होंने पंडित जवाहरलाल नेहरू के लगातार कार्यकाल के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया, बल्कि इसलिए भी है कि यह उपलब्धि भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता और मजबूती का प्रमाण है। भारत ने न केवल लोकतांत्रिक व्यवस्था को बनाए रखा, बल्कि निरंतर प्रगति भी की है और इस सफलता की कहानी में श्री मोदी का योगदान ऐतिहासिक है।

पंडित नेहरू 1947 में असाधारण परिस्थितियों में प्रधानमंत्री बने और 1952 तक गैर-निर्वाचित प्रधानमंत्री रहे। उन्हें महात्मा गांधी के नैतिक समर्थन और स्वतंत्रता आंदोलन की विरासत का लाभ मिला। 1952 के पहले आम चुनाव में कांग्रेस का लगभग एकाधिकार था। यद्यपि 53 राजनीतिक दल चुनाव मैदान में थे, लेकिन उनका प्रभाव सीमित था। इसके विपरीत 2014 और 2024 तक आते-आते भारत आकार, विविधता, अर्थव्यवस्था और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के लिहाज से पूरी तरह बदल चुका था।

यह कहना उचित नहीं होगा कि 1952 में प्रधानमंत्री बनना 2014 या 2024 की तुलना में अधिक कठिन था। जब मैं स्वयं 1996 में प्रधानमंत्री बना, तब तक देश अधिक जागरूक, सवाल पूछने वाला और राजनीतिक रूप से परिपक्व हो चुका था। नेहरू-गांधी परिवार से बाहर के प्रधानमंत्रियों के पास किसी विरासत या विशेष सामाजिक-सांस्कृतिक पूंजी का लाभ नहीं था। श्री मोदी और मेरे जैसे नेताओं ने अपने परिश्रम और जनसमर्थन के बल पर यह स्थान प्राप्त किया।

मैं केवल 11 महीने प्रधानमंत्री रह सका, लेकिन श्री मोदी की निरंतर ऊर्जा और कार्यक्षमता आश्चर्यचकित करती है। इतने लंबे समय तक शीर्ष पर बने रहने के बावजूद न

उनमें थकान दिखाई देती है और न ही जनता के विश्वास में कमी।

कुछ आंकड़े इस बदलाव को स्पष्ट करते हैं। 1952 में जहां केवल 53 राजनीतिक दल चुनाव मैदान में थे, वहीं 2024 में श्री मोदी को 2,593 राजनीतिक दलों वाली प्रतिस्पर्धी व्यवस्था का सामना करना पड़ा। नेहरू के समय लगभग 17 करोड़ मतदाता थे, जबकि 2014 तक यह संख्या 83 करोड़ से अधिक हो गई। भारत की आबादी 1952 के 34 करोड़ से बढ़कर आज 146 करोड़ से अधिक हो चुकी है। ऐसे विशाल और जटिल लोकतंत्र में लगातार जनादेश प्राप्त करना अपने आप में बड़ी उपलब्धि है।

मंत्रिमंडल की संरचना भी समय के साथ बदली है। पंडित नेहरू के मंत्रिमंडल में सामाजिक और जातीय विविधता सीमित थी तथा काका कालेलकर आयोग की सिफारिशों को भी स्वीकार नहीं किया गया। इसके विपरीत वर्तमान मंत्रिमंडल में 27 ओबीसी, 10 अनुसूचित जाति और 5 अनुसूचित जनजाति समुदायों के सदस्य हैं। महिलाओं की भागीदारी भी बढ़ी है और नारी शक्ति वंदन अधिनियम के माध्यम से संसद एवं विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक-तिहाई आरक्षण का मार्ग प्रशस्त किया गया है। अप्रैल 2026 में संसद की संख्या बढ़ाने का प्रस्ताव भी इसी दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है।

श्री मोदी के नेतृत्व में भारत अधिक जागरूक और जीवंत लोकतंत्र के रूप में उभरा है। जातीय चेतना, संवैधानिक अधिकार, नागरिक अधिकार, लैंगिक समानता और पर्यावरण जैसे विषयों पर आज नागरिक पहले से कहीं अधिक सजग हैं। नेहरू के समय अधिकांश लोग अशिक्षित थे और लोकतंत्र की नई व्यवस्था को समझ रहे थे, जबकि आज का नागरिक अधिक शिक्षित, जागरूक और जवाबदेही की अपेक्षा रखने वाला है।

मीडिया परिदृश्य भी पूरी तरह बदल चुका है। पंडित नेहरू को कुछ समाचार पत्रों तक सीमित आलोचना का सामना करना पड़ता था, जबकि आज श्री मोदी को सोशल मीडिया, समाचार चैनलों और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर चौबीसों घंटे होने वाली समीक्षा और आलोचना का सामना करना पड़ता है। इसके बावजूद लगातार जनसमर्थन बनाए रखना उनकी राजनीतिक क्षमता का प्रमाण है।

मैं श्री मोदी की तेज आर्थिक विकास, लक्षित कल्याणकारी योजनाओं और राष्ट्रीय सुरक्षा के मामलों में निर्णायक नेतृत्व की भी सराहना करता हूँ। राष्ट्रहित के प्रश्न पर उन्होंने हमेशा स्पष्ट रुख अपनाया है। वे केवल सरकार के प्रमुख नहीं, बल्कि निरंतर संवाद करने वाले जननेता भी रहे हैं। मैं उनके रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' को नियमित सुनता हूँ और उन प्रयासों की सराहना करता हूँ, जिनके माध्यम से वे देश के कोने-कोने में उत्कृष्ट कार्य करने वाले लोगों को पहचान और सम्मान देते हैं। तकनीक के प्रभावी उपयोग से उन्होंने समाज के हर वर्ग तक पहुंचने का प्रयास किया है।

मेरा विश्वास है कि श्री मोदी की सफलता का आधार उनका निरंतर आत्मचिंतन, अनुशासन और राष्ट्र के प्रति समर्पण है। भारत के सबसे लंबे समय तक लगातार निर्वाचित प्रधानमंत्री बनने की इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे उन्हें उत्तम स्वास्थ्य, असीम ऊर्जा और राष्ट्रसेवा के लिए दीर्घायु प्रदान करें।

(लेखक राज्यसभा सदस्य और भारत के पूर्व प्रधानमंत्री हैं)

लोगों के भरोसे से ही ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल होती है

नीतीश कुमार

भारत जैसे विशाल और प्रतिस्पर्धी लोकतंत्र में जनता का विश्वास जीतना कठिन और उसे बनाए रखना उससे भी कठिन है। लगातार राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और जनता की कड़ी निगरानी के बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का भारत के सबसे लंबे समय तक लगातार निर्वाचित प्रधानमंत्री बनना लोकतांत्रिक राजनीति में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

प्रधानमंत्री मोदी और मेरी राजनीतिक चेतना आपातकाल के दौर में विकसित हुई। लोकतांत्रिक अधिकारों पर हुए हमले और उन्हें पुनर्स्थापित करने के संघर्ष ने सार्वजनिक जीवन और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति हमारी सोच को आकार दिया। वह केवल राजनीतिक आंदोलन नहीं, बल्कि लोकतंत्र के प्रति प्रतिबद्धता का जीवन अनुभव था। लंबे समय तक यह धारणा रही कि देश का सर्वोच्च पद केवल प्रभावशाली परिवारों तक सीमित है, लेकिन साधारण पृष्ठभूमि से निकलकर प्रधानमंत्री पद तक पहुंचने की मोदी की यात्रा ने इस सोच को बदला। उनकी सफलता ने लाखों युवाओं में यह विश्वास जगाया कि लोकतंत्र में मेहनत, संकल्प और क्षमता जन्म और पारिवारिक पृष्ठभूमि से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं।

समाजवादी विचारधारा से प्रेरित होने के नाते मेरा हमेशा मानना रहा है कि राजनीति का उद्देश्य लोगों का जीवन बेहतर बनाना होना चाहिए। इस दृष्टि से गरीबी उन्मूलन के क्षेत्र में केंद्र सरकार का प्रयास उल्लेखनीय रहा है। पिछले वर्षों में करोड़ों लोगों तक शौचालय, बैंक खाते, पक्के घर, गैस कनेक्शन, नल से जल और स्वास्थ्य बीमा जैसी मूलभूत सुविधाएं पहुंची हैं। अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़े वर्ग, महिलाओं और गरीब परिवारों के बड़े वर्ग ने स्वयं को विकास प्रक्रिया का सक्रिय भागीदार महसूस किया है। युवाओं के लिए उद्यमिता और स्वरोजगार के नए अवसर भी तैयार हुए हैं।

महिलाओं के सम्मान और सशक्तीकरण पर विशेष ध्यान भी प्रधानमंत्री मोदी की नीतियों की महत्वपूर्ण विशेषता रहा है। बिहार में जीविका समूहों के अपने अनुभव के आधार पर मैं कह सकता हूं कि जब महिलाओं को विकास के केंद्र में रखा जाता है तो समाज तेजी से आगे बढ़ता है। इसी सोच को राष्ट्रीय स्तर पर भी व्यापक रूप मिला है।

मुख्यमंत्री के रूप में लंबे अनुभव से मैं जानता हूं कि किसी भी योजना का वास्तविक मूल्य उसके प्रभावी क्रियान्वयन में होता है। केवल घोषणा पर्याप्त नहीं होती। प्रधानमंत्री मोदी ने प्रौद्योगिकी, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, पारदर्शिता और जवाबदेही पर जोर देकर नीति और क्रियान्वयन के बीच की दूरी कम की है। सरकारी योजनाओं का लाभ बिना बिचौलियों के सीधे लोगों तक पहुंचने से शासन व्यवस्था के प्रति जनता का विश्वास मजबूत हुआ है। नागरिकों से उनका निरंतर संवाद भी इस भरोसे को और सुदृढ़ करता है।

राज्य और केंद्र दोनों स्तरों पर लंबे प्रशासनिक अनुभव ने प्रधानमंत्री मोदी को सहकारी संघवाद की गहरी समझ दी है। बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में मैंने स्वयं महसूस किया कि राजनीतिक परिस्थितियों से ऊपर उठकर उन्होंने राज्य के विकास के लिए सहयोग दिया। 2024-25 और 2025-26 के केंद्रीय बजट में मखाना बोर्ड, भागलपुर विद्युत संयंत्र, बाढ़ प्रबंधन और विभिन्न आधारभूत संरचना परियोजनाओं के लिए विशेष प्रावधान इसका उदाहरण हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने बिहार की सांस्कृतिक विरासत को भी वैश्विक पहचान दिलाने का प्रयास किया है। मखाना, मधुबनी चित्रकला और अन्य स्थानीय उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रस्तुत किया गया। जननायक कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न से सम्मानित करने का निर्णय भी लंबे समय से लंबित जनभावना का सम्मान था। पिछले दशक में बिहार को सड़क, रेल, पुल, हवाई अड्डों और अन्य आधारभूत संरचना परियोजनाओं का व्यापक लाभ मिला है। गंगा पर नए पुल, राष्ट्रीय राजमार्गों का विस्तार, रेलवे का विद्युतीकरण और वंदे भारत जैसी आधुनिक ट्रेनों की शुरुआत ने विकास की गति को नई दिशा दी है। रेलवे के आधुनिकीकरण को मैं विशेष रूप से महत्वपूर्ण मानता हूं क्योंकि यह आर्थिक और सामाजिक विकास का आधार है।

मैंने हमेशा भ्रष्टाचार के प्रति शून्य सहनशीलता का समर्थन किया है। प्रधानमंत्री मोदी की लोकप्रियता का एक बड़ा कारण उनका बेदाग सार्वजनिक जीवन और भ्रष्टाचार के विरुद्ध स्पष्ट रुख भी है। संस्थागत सुधारों के माध्यम से पारदर्शिता बढ़ाने के साथ-साथ भ्रष्टाचार के मामलों में कानूनी कार्रवाई की राजनीतिक इच्छाशक्ति भी दिखाई गई है।

वैश्विक स्तर पर भी भारत की प्रतिष्ठा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अर्थव्यवस्था, जलवायु परिवर्तन, तकनीक, स्वास्थ्य और वैश्विक सहयोग जैसे विषयों पर आज भारत की बात गंभीरता से सुनी जाती है। विभिन्न देशों के साथ संतुलित संबंधों और शांति तथा विकास के प्रति प्रतिबद्धता ने भारत को 21वीं सदी की प्रमुख वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करने की दिशा में मजबूत आधार तैयार किया है।

सार्वजनिक जीवन में लंबे अनुभव के आधार पर मैं जानता हूं कि नेतृत्व निरंतर परिश्रम, अनुशासन, जनता से संवाद और दूरदर्शी सोच की मांग करता है। प्रधानमंत्री मोदी की ऊर्जा, कार्यक्षमता और समर्पण ने उन्हें लंबे समय तक जनता का विश्वास बनाए रखने में मदद की है। भारत के सबसे लंबे समय तक लगातार निर्वाचित प्रधानमंत्री बनने की उनकी उपलब्धि केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनता के विश्वास की शक्ति का भी प्रमाण है। इस ऐतिहासिक अवसर पर मैं उन्हें बधाई देता हूं और राष्ट्र सेवा के लिए उनके उत्तम स्वास्थ्य तथा निरंतर सफलता की कामना करता हूं।

(लेखक राज्यसभा सदस्य और विहार के पूव मुख्यमंत्री हैं।)